आई एस एस एन 0971-9873

आई सी एम आर पत्रिका

वर्ष-32, अंक-3

मार्च, 2018

इस अंक में

ज़ीका विषाणु : भारत में स्थिति 25

हिंदी में चिकित्साविज्ञान संबंधी लोकप्रिय पुस्तकों के लिए द्विवार्षिक आईसीएमआर पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित 27

इम्फाल, मणिपुर में आयोजित 'प्राइड ऑफ इंडिया एक्स्पो 2018' में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की भागीदारी 28

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के समाचार 31

राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक गतिविधियों में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के वैज्ञानिकों की भागीदारी 33

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वित्तीय सहायता में सम्पन्न संगोष्ठियां/सेमिनार/कार्यशालाएं/पाठ्यक्रम/सम्मेलन 34

संपादक मंडल

अध्यक्ष — **श्रीमती प्रीति सूदन**
सचिव, भारत सरकार
स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं
महानिदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान
अनुसंधान परिषद

उपाध्यक्ष — **डॉ चन्द्र शेखर**
अपर महानिदेशक

प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग — **डॉ नीरज टण्डन**

संपादक — **डॉ कृष्णानन्द पाण्डेय**

प्रकाशक — **श्री जगदीश नारायण माथुर**

ज़ीका विषाणु : भारत में स्थिति

ज़ीका विषाणु का प्रथम प्रकोप वर्ष 2013 में मार्केसास द्वीपसमूह में हुआ और मई 2015 में ब्राज़ील में फैल गया। उसके बाद से भारत में स्वास्थ्य एजेंसियां भारत में ज़ीका की स्थिति पर नज़र रखते हुए सचेत हो गईं हैं। अनुमान किया गया था कि *एडीज़ इजिप्टाई* नामक रोगवाहक मच्छर की सर्वव्यापी उपस्थिति और अतिसंवेदन शील परपोषी होस्ट की व्यापक उपस्थिति के कारण भारत में ज़ीका विषाणु का प्रकोप संभव हो सकता है। दिनांक 15 मई, 2017 को भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय को भारतीय राज्य गुजरात के अहमदाबाद स्थित बापूनगर क्षेत्र से ज़ीका विषाणु रोग से पीड़ित तीन मामले प्रकाश में आए थे, जिनकी प्रयोगशाला में रियल टाइम रिवर्स ट्रांसक्रिप्शन पॉलीमिरेज चेन रिएक्शन (RT-PCR) परीक्षण द्वारा पुष्टि की गई थी। इस घोषणा से पहले भारत विश्व स्वास्थ्य संगठन की श्रेणी–4 के अंतर्गत था जिसका आशय था कि विषाणु की उपस्थिति हो सकती है। परन्तु अधिसूचित मामलों का कोई लिखित प्रमाण नहीं था। ज़ीका के इन तीन पुष्ट मामलों के प्रकाश में आने के बाद भारत विश्व स्वास्थ्य संगठन की श्रेणी–2 में पहुंच गया। हाल ही में चेन्नई से ज़ीका विषाणु के एक और मामले की पुष्टि के बाद ज्वर से पीड़ित बड़ी संख्या में नमूनों की जांच की गई जिसमें केवल चार मामले ज़ीका विषाणु धनात्मक पाए गए।

प्रस्तुत आलेख में भारत में ज़ीका विषाणु रोग के संदर्भ में भारत की चुनौतियों को दूर करने की समीक्षा की गई है। इसके साथ–साथ यह भी समीक्षा की गई है कि बड़ी संख्या में लोगों में इसकी पहचान क्यों नहीं की गई है और भविष्य में इससे जुड़े क्या संभावित खतरे हो सकते हैं।

वर्तमान मामलों के प्रमाण के आधार पर यह कहा जा सकता हैं कि ज़ीका विषाणु की शुरुआत हाल में नहीं हुई है। वर्ष 1954 में राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान (उस समय विषाणु अनुसंधान केन्द्र के नाम से ज्ञात) ने भड़ूच जिले से नमूनों की जांच की थी जिनमें 16.8 प्रतिशत नमूनों में ज़ीका विषाणु के प्रतिपिण्ड की पहचान की गई थी। हालांकि, डेंगी विषाणु और अन्य फ्लैवीवाइरसेज़ के साथ ज़ीका विषाणु की उच्च पारस्परिक प्रतिक्रियाशीलता के कारण सीरम की जांच के आधार पर भारत में ज़ीका विषाणु संक्रमण की पुष्टि करना कठिन था। गुजरात में ज़ीका विषाणु के तीन मामलों और चेन्नई में इसके एक मामले की पहचान से यात्रा के कारण उस क्षेत्र में ज़ीका विषाणु की स्थानिकता का कोई प्रमाण नहीं मिला। इससे संकेत मिलता है कि ज़ीका विषाणु की उपस्थिति भारत में नई नहीं है और रोगवाहक में इसकी उपस्थिति निष्क्रिय/प्रच्छन्न रूप में रही होगी। ज़ीका विषाणु के जानपदिक रोगविज्ञान के संदर्भ में प्रभावित देशों में चिन्ता के अभी भी कुछ प्रमुख विषय हैं – यथा – यात्रा संबद्ध ज़ीका विषाणु संक्रमण का प्रवेश, विशिष्ट लक्षण, संभावित खतरे, निवारण और

प्रभावित व्यक्तियों का चिकित्सा प्रबंध, प्रभावित गर्भवती महिलाओं का चिकित्सा प्रबंध और इससे संबद्ध *माइक्रोसिफैली*। ज़ीका विषाणु संक्रमण का प्राथमिक संचरण *एडीज़ इजिप्टाई* और *एडीज़ एल्बोपिक्टस* नामक मच्छरों के काटने से होता है। रोगवाहक मच्छर के कारण हुए संक्रमण के प्रकोप का तात्पर्य है कि उस स्थान पर ऐसे अतिसंवेदनशील मच्छरों की उपस्थिति बड़ी संख्या में है जो निम्नतम स्तर के विषाणु संक्रमण की स्थिति में भी संक्रमित हो कर ज़ीका विषाणु का संचरण करने में सक्षम होते हैं।

भारत में ज्वर संबंधी बीमारी के 35,000 से अधिक सीरम नमूनों की जांच करने पर केवल चार मामले ही प्रकाश में आए जिससे उसी समुदाय में इसके बहुत निम्न स्तर पर संचरण होने का संकेत मिलता है। इसके अतिरिक्त, लगभग 18,000 मच्छरों की जांच की गई। इसमें गुजरात स्थित अहमदाबाद के बापूनगर क्षेत्र में लगभग 500 मच्छरों की जांच सम्मिलित है जहां ज़ीका विषाणु संक्रमण के दो मामले प्रकाश में आए थे, परन्तु इन मच्छरों में ज़ीका विषाणु की उपस्थिति ज्ञात नहीं की जा सकी। कारक, संवेदनशील होस्ट और आदर्श उष्णकटिबंधीय जलवायु की उपस्थिति के बावजूद भारत में ज़ीका संक्रमण की व्यापकता ब्राजील की तुलना में कम है। पूर्व अध्ययनों से देखा गया है कि प्रकृति में मच्छरों की आबादी में संक्रमित किए जाने वाले विषाणु के प्रति सुग्रायता में काफी भिन्नता है। इस प्रकार की स्थिति भारत में *एनॉफिलीज़ क्युलिसीफेसीज़* से ग्रस्त मलेरिया के मामले में और *एडीज़ इजिप्टाई* मच्छर में चिकुनगुनया विषाणु के संचरण में देखी गई है। चिकुनगुनया विषाणु के संबंध में हुए अध्ययन से संकेत मिले हैं कि चिकुनगुनया विषाणु के प्रति एडीज़ मच्छरों की सुग्राह्यता एक परिमाणात्मक विशेषक (ट्रेट) है। इस प्रकार मच्छरों की आबादी में उच्च रोगवाहक संभाव्यता प्रकोपों के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है। हालांकि, प्रभावी संचरण के लिए न केवल मच्छरों की आबादी में ऐसे सुग्राही मच्छरों को उच्च प्रतिशत में उपस्थिति की आवश्यकता होती है जो मुख्यतया मानव रक्त को अपना आहार बनाते हैं और निम्नतम स्तर में उपस्थित विषाणु से संक्रमित हो जाते हैं, बल्कि यह भी जरूरी होता है कि विषाणु उपभेद (वाइरस स्ट्रेन) मच्छरों के विभिन्न ऊतकों को संक्रमित करने और उनकी संख्या में उत्तरोत्तर भारी वृद्धि करने में भी सक्षम होना चाहिए। अंततः, विषाणु रोगजन मच्छर की शारीरिक प्रतिरक्षा अनुक्रियाओं को पार करते हुए मानव को संक्रमित करता है।

यद्यपि, भारत में ज़ीका विषाणु संक्रमण के कुछ ही मामले प्रकाश में आए हैं, परन्तु अभी तक इस विषाणु का पृथक्करण नहीं हो पाया है। वर्तमान स्थितियों से संकेत मिलता है कि (i) यह विषाणु अफ्रीकी और रोगजनक एशियाई दोनों उपभेदों से भिन्न है; इसलिए इनकी संख्या उतनी तीव्रता से नही बढ़ती जैसा कि अफ्रीकी और एशियाई उपभेदों के लिए ज्ञात है, और (ii) मच्छरों में इस विषाणु के प्रति निम्न सुग्राह्यता भी एक कारण है जो आसानी से विषाणु से संक्रमित नहीं होते और न ही आसानी से संक्रमण का संचरण करते हैं। चिकित्सीय नमूनों से प्राप्त विषाणुओं के फाइलोजिनी आंकड़ों से भी संकेत मिलता है कि यह विषाणु ज्ञात एशियाई एवं अफ्रीकी उपभेदों से कुछ भिन्न है।

बड़े प्रकोपों के लिए सक्षम

यह ज़ीका विषाणु बड़े प्रकोपों के लिए सक्षम है, जैसा कि हाल ही में ब्राज़ील में देखा गया। यह संभव है कि उत्परिवर्तनों (म्युटेशंस) के चलते मच्छर के अधिक सुग्राही हो जाने से प्रकोप जैसी स्थिति उत्पन्न हो सकती है। हाल ही में भारत में चिकुनगुनया विषाणु के साथ यही स्थिति देखी गई थी। वर्ष 1990–1999 के दौरान भारत से इस विषाणु के समाप्त होने का संकेत दिया गया था। हालांकि, वर्ष 2000 में भारत में महाराष्ट्र राज्य के यवत कस्बे से मच्छरों से चिकुनगुनया विषाणु का एक उपभेद पृथक किया गया था। वर्ष 2004 में इंडियन ओशन में चिकुनगुनमा एक महामारी के रूप में उभर कर आया, चिकुनगुनया विषाणु का आण्विक अध्ययन करने से देखा गया कि इस महामारी उपभेद की उत्पत्ति यवत उपभेद से हुई थी जिसकी अवधि लगभग 9–11 वर्ष थी। जातिवृत्तिक विश्लेशण से पता चला कि वर्ष 2005–2007 के दौरान हुए प्रकोप के प्रोजेनिटर 9–11 वर्ष पूर्व मौजूद थे जिसकी उत्पत्ति यूगांडा में हुई होगी। यह उपभेद मानवों और एडीज़ मच्छरों दोनों के प्रति अत्यन्त सुग्राही था।

वर्तमान संदर्भ में यह परिकल्पना की गई है कि भारतीय मच्छरों के उपभेदों में ज़ीका विषाणु के लिए बहुत निम्न सुग्राह्यता होती है। मानवों में इस विषाणु की बहुत निम्न उपस्थिति से भी संकेत मिलता है कि मच्छर–मानव–मच्छर के बीच बहुत निम्न स्तर का चक्र होना प्रकृति में इसके आहार के लिए पर्याप्त नहीं हो सकता, इसलिए, जन्तु/पृष्ठवंशी जन्तु (वर्टीब्रेट्स) के बीच सम्पर्क चक्र होने की संभावना का पता लगाने की आवश्यकता है। इसलिए भारत में ऐसे जन्तु चक्र की उपस्थिति का पता लगाने की आवश्यकता है। इसके अलावा ट्रांसओवेरियल संचरण की उपस्थिति का भी पता लगाने की आवश्यकता है।

ज़ीका संक्रमण की तीव्र प्रावस्था 4–5 दिनों की होती है, इस बीच सीरम की जांच द्वारा ज़ीका संक्रमण की पुष्टि करना कठिन होता है। इसका कारण डेंगी विषाणु के साथ पारस्परिक उच्च प्रतिक्रियाशीलता होना होता है। इस स्थिति में सीरम अध्ययन द्वारा जांच की सिफ़ारिश नहीं की जाती जहां संदिग्ध रूप में उच्च धनात्मकता एक संत्रास की स्थिति उत्पन्न कर सकती है। वर्तमान में, बाज़ार में सीरम अध्ययन के केवल कुछ ही किट्स उपलब्ध हैं। यह पता लगाना बहुत कठिन होता है कि ज़ीका संक्रमित अथवा संक्रमण के इतिहास सहित महिला से जन्मे शिशु में जन्मजात अशक्तता उत्पन्न होगी। अभी आण्विक परीक्षण विधियों द्वारा सभी अलाक्षणिक गर्भवती महिलाओं की जांच करना संभाव्य नहीं है। अब जब देश में ज़ीका विषाणु की उपस्थिति की पुष्टि हो गई है, देश में माइक्रोसिफैली को एक अधिसूचित रोग की श्रेणी में रखा जाना चाहिए जिससे ज़ीका विषाणु द्वारा उत्पन्न रोगभार का सीधे आकलन किया जा सके।

ज़ीका विषाणु पर शोध की आवश्यकता

भारत में ज़ीका विषाणु के प्राकृतिक चक्र को ज्ञात करने के लिए शोध कार्य की आवश्यकता है। इससे संबंधित कई प्रश्नों के हल भी ज्ञात करने की आवश्यकता है जैसे (i) यह विषाणु प्रकृति में किस प्रकार उपस्थित बना रहता है ? अर्थात रोगवाहक मच्छर की जैविकी का अध्ययन किया जाना है; (ii) भारत में मच्छरों की आबादी में ज़ीका विषाणु का थ्रेसहोल्ड टाइटर क्या है?; (iii) ज़ीका विषाणु की सुग्राह्यता के संदर्भ में रोगवाहक मच्छर की विभिन्न आबादियों पर आनुवंशिक अध्ययन की आवश्यकता है; (iv) ज़ीका विषाणु से संक्रमित गर्भवती महिलाओं के सगर्भता परिणाम की स्थिति क्या है? ; (v) क्या भारत में कोई अन्य पृष्ठवंशी परपोषी (वर्टीब्रेट होस्ट) उपस्थित हैं?; और (vi) विषाणु संक्रमण पर अन्य फ्लैवीवाइरसेज़ की पारस्परिक अनुक्रिया का क्या प्रभाव होता है? दशकों से इस विषाणु की सर्वव्यापक उपस्थिति उष्णकटिबंधीय और भूमध्यवर्ती क्षेत्रों में रही है, और कोई विशेष क्रमविकास के संबंध में कोई विशेष उत्परिवर्तन नहीं देखा गया है। परन्तु रोगवाहक की जैविकी और ज़ीका विषाणु के रोगजनन के विषय में और अध्ययन की आवश्यकता है। सभी गर्भवती महिलाओं के लिए ज़ीका विषाणु और माइक्रोसिफैली (लघुशिरस्कता) के लिए जांच अनिवार्य की जानी चाहिए और देश भर में अस्पतालों एवं प्रयोगशालाओं के सहयोग में निगरानी नेटवर्क की शुरुआत की जानी चाहिए। इससे हमें भारत में ज़ीका विषाणु संक्रमण की उपस्थिति जानने में सहायता मिलेगी। भारत में ज़ीका विषाणु से संक्रमित केवल चार मामले प्रकाश में आए हैं जो अभी शुरुआत भर है। बहुत मामले अलाक्षणिक अवस्था में उपस्थित हो सकते हैं। इसलिए एक निगरानी नेटवर्क की शुरुआत किए जाने की आवश्यकता है। परन्तु भारत जैसे देश में ऐसे साहासिक कार्यों के लिए बड़ी धनराशि का व्यय होता है और इसके लिए राजनैतिक प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है।

भारत में *एड़ीज इजिप्टाई* मच्छरों की व्यापक उपस्थिति के कारण ज़ीका विषाणु के लिए अनुकूल वातावरण है। यद्यपि, ये मच्छर घरों में और उसके आस–पास पेयजल के स्रोतों में पूरे वर्ष भर प्रजनन करते हैं परन्तु मानसून के दौरान इनके प्रजनन स्थलों की संख्या अधिक बढ़ जाने से इनकी सघनता बहुत अधिक बढ़ जाती है। उच्च आर्द्रता और अनुकूलतम तापमान की स्थितियां कई दिनों तक इनको जीवित रखने में सहायक होती हैं। इसलिए इन मच्छरों को प्रत्येक 3–4 दिनों में अण्डे देने के अवसर मिल जाते हैं और कई बार रक्त आहार प्राप्त करते हैं। अधिकारियों ने सिफारिश की है कि समुदाय की भागीदारी में मच्छरों के प्रजनन स्रोतों की संख्या कम करना *एडीज़ इजिप्टाई* का सबसे प्रभावी और दीर्घकालिक निवारक और नियंत्रण उपाय है। भारत में समुदाय की अपनी बाधाओं के कारण यह लक्ष्य प्राप्त करना आसान नहीं है। रिपेलेंट्स, मच्छर दूर भगाने के साधनों और मच्छरदानी के प्रयोग, रुके हुए पानी के शोधन द्वारा भी इस रोग को रोका जा सकता है।

निष्कर्ष

भारत में ज़ीका विषाणु संक्रमण के चार मामले प्रकाश में आए, इससे पता चलता है कि ज़ीका विषाणु का संचरण स्थानीय हुआ है और इसका संचरण यात्रा से जुड़ा नहीं है। यह भी संकेत दिया गया है कि भारत में ज़ीका विषाणु की उपस्थिति एक लम्बी अवधि से रही होगी। चिकुनगुनिया के संदर्भ में रोगवाहक और विषाणु के बीच संबंधों पर पूर्व में सम्पन्न अध्ययनों से संकेत मिला है कुछ समय में ज़ीका विषाणु भविष्य में सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए चिन्ता का एक प्रमुख विषय बन सकता है। भारत में अभी भी ज़ीका विषाणु को डेंगी विषाणु और चिकुनगुनया विषाणु जैसे अन्य फ्लैवीवाइरसेज़ की तरह प्राथमिकता नहीं दी गई है। अतः, भारत में ज़ीका विषाणु के प्रभाव क्षेत्र का आकलन करने के लिए एक दीर्घकालिक ठोस निगरानी नेटवर्क की आवश्यकता है जिसमें स्थानीय, क्षेत्रीय, राज्य एवं केन्द्रीय स्तर पर संबंधित सार्वजनिक स्वास्थ्य अधिकारियों की सक्रिय भूमिका हो।

यह आलेख भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित ***'इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च'*** के नवम्बर, 2017 अंक में *'ज़ीका वाइरस : करेंट कंसर्न्स इन इंडिया'* शीर्षक से प्रकाशित समीक्षा लेख पर आधारित है।

वर्ष 2014–2015 हेतु हिंदी में चिकित्साविज्ञान संबंधी लोकप्रिय पुस्तकों के लिए द्विवार्षिक आईसीएमआर पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित

वर्ष 2014–15 के लिए हिंदी में चिकित्साविज्ञान संबंधी लोकप्रिय पुस्तकों के लिए द्विवार्षिक आईसीएमआर पुरस्कार के लिए जारी विज्ञापन के परिणामस्वरूप कुल 9 पुस्तकें प्राप्त हुईं। निर्णायक मण्डल द्वारा गहन समीक्षा और मूल्यांकन के पश्चात दो पुस्तकें चयन की गईं। प्रथम पुरस्कार के लिए प्रोफेसर दिनेश मणि की पुस्तक 'जीनोम एवं जीनोमिकी' और द्वितीय पुरस्कार के लिए डॉ सुनंदा दास द्वारा लिखित पुस्तक 'प्रदूषण जनित रोग' शीर्षक से पुस्तकों का चयन किया गया। दिनांक 9 मार्च, 2018 को आई सी एम आर मुख्यालय में पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता आईसीएमआर के वैज्ञानिक 'जी' एवं इन्नोवेशन एवं ट्रांसलेशनल अनुसंधान प्रभाग के प्रमुख डॉ चंद्र शेखर ने की। सर्वप्रथम डॉ के. एन. पाण्डेय ने अध्यक्ष, दोनों

डॉ चंद्र शेखर पुरस्कार प्रदान करते हुए

बायें से डॉ के. एन. पाण्डेय, डॉ नीरज टण्डन, डॉ चंद्र शेखर, प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत प्रो. दिनेश मणि और द्वितीय पुरस्कार विजेता डॉ सुनंदा दास

पुरस्कार प्राप्तकर्ताओ, एवं सभागार में उपस्थित सभी अधिकारियों और अतिथियों का स्वागत किया। प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग की प्रमुख डॉ नीरज टण्डन ने इस पुरस्कार से संबंधित जानकारी प्रदान की। डॉ चंद्र शेखर ने प्रथम पुरस्कार विजेता प्रो. दिनेश मणि और द्वितीय पुरस्कार विजेता डॉ सुनंदा दास को प्रमाण–पत्र और मेमेंटो प्रदान किए। प्रथम पुरस्कार की धन राशि 1 लाख रुपए और द्वितीय पुरस्कार की धन राशि 50,000 रुपए है। इस अवसर पर प्रो. दिनेश मणि ने अपनी पुरस्कृत पुस्तक के विषय में जानकारी दी। डॉ सुनंदा दास ने आई सी एम आर द्वारा पुरस्कृत अपनी पुस्तक की उपयोगिता के संबंध में जानकारी दी। अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में डॉ चंद्र शेखर ने दोनों पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं को आईसीएमआर की ओर से बधाई दी और हिंदी भाषी जनसाधारण को इन विषयों पर सरल हिंदी में जागरूकता फैलाने में दोनों लेखकों के प्रयासों की सराहना की। इस अवसर पर आई सी एम आर मुख्यालय के बड़ी संख्या में वैज्ञानिक, अधिकारी और स्टाफ उपस्थित थे।

प्रो. दिनेश मणि का सम्बोधन

मंचासीन बायें से डॉ नीरज टण्डन, डॉ चंद्र शेखर, प्रो. दिनेश मणि और डॉ सुनंदा दास

इम्फाल, मणिपुर में आयोजित 'प्राइड ऑफ इंडिया एक्स्पो 2018' में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की भागीदारी

दिनांक 16–20 मार्च, 2018 के दौरान इम्फाल स्थित मणिपुर विश्व विद्यालय में आयोजित 105वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस का विषय था ''विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के माध्यम से जरूरतमन्द लोगों तक पहुंचना'' अर्थात विज्ञान और प्रौद्यागिकी के क्षेत्र में प्राप्त परिणामों को जनसाधारण तक पहुंचाना और हुई प्रगति के विषय में जन साधारण में जागरूकता फैलाना।

भारत के माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की गरिमामयी उपस्थिति में दिनांक 16 मार्च, 2018 को 105वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस का उद्घाटन समारोह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मणिपुर की महामहिम राज्यपाल डॉ नज़मा हेपतुल्ला, मणिपुर के माननीय मुख्यमंत्री श्री एम. बीरेन सिंह, माननीय केन्द्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा भू विज्ञान मंत्री डॉ हर्ष वर्धन, 105वीं भारतीय विज्ञान

मंचासीन माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी, मणिपुर की राज्यपाल डॉ नज़मा हेपतुल्ला, केंद्रीय विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ हर्ष वर्धन एवं अन्य गणमान्य

कांग्रेस के प्रधान सभापति (जनरल प्रेसीडेंट) डॉ अच्युत सामंता, और मणिपुर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ आद्या प्रसाद पाण्डेय की भी गरिमामयी उपस्थिति थी। डॉ सामंता ने माननीय प्रधान मंत्री महोदय के साथ–साथ उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों, उपस्थित फैकल्टी

माननीय केंद्रीय विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ हर्ष वर्धन आई सी एम आर पैवीलियन मे

सदस्यों, शोधकर्ताओं और विद्यार्थीगण का स्वागत करते हुए अपने सम्बोधन में हमारे देश में निर्धनता, कुपोषण, से जुड़ी समस्याओं को दूर करने के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के माध्यम से हल ढूंढने का आह्वान किया। माननीय प्रधान मंत्री की प्रेरणा से संचालित स्वच्छता अभियान, जल संरक्षण, डिजिटल इंडिया, आदि कार्यक्रमों के माध्यम से भारत के नागरिकों के जीवन स्तर को ऊंचा बढ़ाने में सभी वैज्ञानिकों के योगदानों का आह्वान किया।

मणिपुर राज्य के माननीय शिक्षा मंत्री श्री थोकचॉम राधे श्याम आई सी एम आर पैवीलियन में

इस अवसर पर माननीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा भूविज्ञान मंत्री डॉ हर्षवर्धन ने अपने सम्बोधन में देश में वैज्ञानिक सोच को बढ़ाने में अपने देश के वैज्ञानिकों की महत्वपूर्ण भूमिका के लिए उन्हें बधाई दी। उन्होंने कहा कि 'आपके निरन्तर प्रयासों और कठिन परिश्रम के परिणामस्वरूप ही विश्व के वैज्ञानिकों में भारतीय वैज्ञानिकों ने 10वां स्थान प्राप्त किया है। भारत का 'वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद' विश्व के 1200 वैज्ञानिक संस्थानों में 9वें स्थान पर पहुंच गया है। आज 'ब्रेन ड्रेन' के स्थान पर 'ब्रेन गेन' के अन्तर्गत विदेशी शोध संस्थानों में कार्यरत सैकड़ों वैज्ञानिक अपनी विशेषज्ञ सेवाएं देने के लिए भारत वापस आ रहे हैं। मुझे भारतीय वैज्ञानिकों की प्रतिभा और जनहित में किए जा रहे उनके शोध कार्यों पर मुझे गर्व है''। इस अवसर पर मणिपुर के माननीय मुख्य मंत्री श्री एम. बीरेन सिंह ने मणिपुर राज्य में भारतीय विज्ञान कांग्रेस के आयोजन को अत्यन्त महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि इस विशाल कार्यक्रम के आयोजन से न केवल मणिपुर बल्कि पूरे पूर्वोत्तर क्षेत्र में जनसाधारण में वैज्ञानिक सोच का प्रसार होगा और देश के वैज्ञानिकों द्वारा सम्पन्न शोधकार्यों एवं उनसे प्राप्त उपलब्धियों के विषय में जागरूकता फैलेगी। अपने अध्यक्षीय संबोधन में माननीय प्रधान मंत्री महोदय ने मणिपुर में पहली बार

भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार डॉ आर. चिदाम्बरम आई सी एम आर पैवीलियन में

आई सी एम आर पैवीलियन में विद्यार्थीगण

आई सी एम आर पैवीलियन में विद्यार्थीगण

आई सी एम आर पैवीलियन में विद्यार्थीगण

भारतीय विज्ञान कांग्रेस के आयोजन और इस अवसर पर देश के विभिन्न वैज्ञानिक संस्थानों से पधारे वैज्ञानिकों, शोध छात्रों की उपस्थिति पर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि आप वैज्ञानिकगण ज्ञान के पावर हाउस हैं। आज 'अनुसंधान एवं विकास' के परिणामस्वरूप आम लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव आ रहा है। भारत सरकार ने पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए अनेक योजनाओं की शुरुआत की है जिनसे इस क्षेत्र के निवासियों में न केवल जागरूकता उत्पन्न होगी बल्कि इसका प्रभाव उनके जीवन स्तर को ऊंचा बनाने पर भी पड़ेगा। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने क्षयरोग यानि टी बी को वर्ष 2030 तक समाप्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया है, हम इस लक्ष्य को 5 वर्ष पूर्व अर्थात वर्ष 2025 तक हासिल कर लेंगे। हमारे देश की एक बड़ी जनजातीय आबादी सिकिल सेल एनीमिया से ग्रस्त है। हमारे चिकित्सा वैज्ञानिकों को इस समस्या से बचने के उपायों के विषय में जागरूकता फैलाने की नितान्त आवश्यकता है। देश में बड़ी संख्या में बच्चे कुपोषित हैं। भारत सरकार ने 'राष्ट्रीय पोषण मिशन' कार्यक्रम की शुरुआत की है। जो बच्चों में कुपोषण की समस्या को दूर करने में सहायक होगी।''

माननीय प्रधान मंत्री महोदय ने नदियों को प्रदूषण मुक्त बनाने, बायो ईंधन, सौर्य ऊर्जा के प्रयोग को बढ़ाना देने की दिशा में प्रयास किए जाने हेतु वैज्ञानिकों का आह्वान किया। उन्होंने भारतीय आबादी में स्वास्थ्य एवं शिक्षा के स्तर को बढ़ाने में वैज्ञानिकों को और अधिक प्रयास करने की आवश्यकता पर बल दिया। अपने सम्बोधन के पश्चात माननीय प्रधान मंत्री महोदय ने 105वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस के अवसर पर पुरस्कृत वैज्ञानिकों एवं शोद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किएं।

प्राइड ऑफ इंडिया एक्स्पो 2018

इम्फाल स्थित मणिपुर विश्वविद्यालय में आयोजित 105वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस के अवसर पर ''प्राइड ऑफ इंडिया एक्स्पो 2018'' नामक एक भव्य प्रदर्शनी आयोजित की गई। देश के प्रतिष्ठित वैज्ञानिक संगठनों यथा–भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग के साथ–साथ अनेक सरकारी एवं गैर–सरकारी संगठनों ने इस प्रदर्शनी में हिस्सा लिया।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद ने एक भव्य पैवीलियन के साथ इस प्रदर्शनी में हिस्सा लिया। पोस्टर्स, लाइव प्रदर्शन के माध्यम से प्रदर्शनी में पधारे शोध छात्रों विद्यार्थियों, फैकल्टी सदस्यों को आई सी एम आर द्वारा जारी शोध गतिविधियों और उपलब्धियों के विषय में जानकारी प्रदान की गई। दिनांक 16 मार्च, 2018 को माननीय विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ हर्ष वर्धन ने

आई सी एम आर पैवीलियन में विद्यार्थीगण

आई सी एम आर पैवीलियन में विद्यार्थीगण

आई सी एम आर पैवीलियन में विद्यार्थीगण

आई सी एम आर पैवीलियन में विद्यार्थीगण

'प्राइड ऑफ इंडिया एक्स्पो 2018' प्रदर्शनी का उद्‌घाटन किया। वे आई सी एम आर पैवीलियन में भी पधारे जहां भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वैज्ञानिक 'जी' डॉ नीरज टण्डन ने मंत्री महोदय का स्वागत करते हुए आई सी एम आर की प्रमुख गतिविधियों और उपलब्धियों से अवगत कराया। दिनांक 17 मार्च, 2018 को मणिपुर के माननीय शिक्षा मंत्री श्री थोकचॉम राधे श्याम और को भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार डॉ आर. चिदाम्बरम आई सी एम आर पैवीलियन में पधारे जहां उन्होंने आई सी एम आर की शोध गतिविधियों में रुचि लेते हुए जानकारी प्राप्त की।

आई सी एम आर मुख्यालय के अलावा इस प्रदर्शनी में आई सी एम आर के संस्थानों ने भी हिस्सा लिया। इस अवसर पर हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय पोषण संस्थान के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ डी. रघुनाथराव, वैज्ञानिक 'ई' डॉ जी. सुब्बाराव; डिब्रूगढ़ स्थित क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ आर. भट्‌टाचार्य और वैज्ञानिक 'ई' डॉ सीराज खान तथा राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान के कोलकाता स्थित क्षेत्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य केन्द्र (पूर्व) के वैज्ञानिक 'बी' डॉ पवन कुमार एवं तकनीकी अधिकारी डॉ जाफरे नेंजापुम ने हिस्सा लिया और विभिन्न उपकरणों के माध्यम से कार्य परिवेश में ताप–दबाव, ध्वनि स्तर, श्वसन के साथ धूल कण के प्रवेश से संबंधित जानकारी प्रदान की। तीनों संस्थानों के वैज्ञानिकों ने संबद्ध संस्थान की शोध गतिविधियों के विषय में जानकारी प्रदान की। क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र डिबूगढ़ के वैज्ञानिकों ने मच्छर के लार्वा, मलेरिया के परजीवी मच्छर के विभिन्न प्रजनन स्थलों का लाइव प्रदर्शन किया।

राष्ट्रीय पोषण संस्थान के वैज्ञानिकों ने पोषण के क्षेत्र में सम्पन्न शोधकार्यों और प्राप्त उपलब्धियों के विषय में जानकारी प्रदान की। डॉ नीरज टण्डन और वैज्ञानिक 'एफ' डॉ कृष्णानन्द पाण्डेय ने पैवीलियन में पधारे बडी संख्या में विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं, फैकल्टी सदस्यों, स्कूली विद्यार्थियों के साथ–साथ जनसाधारण को आई सी एम आर की गतिविधियों से अवगत कराया। दिनांक 20 मार्च, 2018 को 105वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस के समापन के अवसर पर भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद पैवीलियन को ''सर्वोत्तम सूचनापरक पैवीलियन'' पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। आई सी एम आर की ओर से डॉ नीरज टण्डन ने अपने साथियों के साथ मणिपुर की माननीया राज्यपाल डॉ नज़मा हेपतुल्ला से प्रमाण–पत्र एवं मेमेंटो प्राप्त किया।

एलेक्ट्रॉनिक मीडिया के समक्ष वैज्ञानिक 'जी' डॉ नीरज टण्डन

मणिपुर राज्य की माननीया राज्यपाल डॉ नज़मा हेपतुल्ला से प्रमाण–पत्र और मेमेंटो प्राप्त करती हुई डॉ टण्डन अन्य वैज्ञानिकगण के साथ

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के समाचार

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के विभिन्न तकनीकी समूहों/तकनीकी समितियों की नई दिल्ली में सम्पन्न बैठकें:

एंटीमाइक्रोबियल स्टेवार्डशिप प्रोजेक्ट्स (AMSP) की समीक्षा बैठक	1 मार्च, 2018
क्षयरोग, कुष्ठरोग और अन्य वक्ष रोगों पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	5 मार्च, 2018
सामाजिक व्यावहारिक एवं स्वास्थ्य प्रणाली अनुसंधान प्रभाग की बैठक	6 मार्च, 2018
शोध विधिविज्ञान परियोजनाओं के अंतर्गत वार्षिक/अन्तिम रिपोर्ट्स की समीक्षा हेतु परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	6 मार्च, 2018
दुर्लभ रोग रजिस्ट्री पर संचालन समूह की संयुक्त बैठक	7 मार्च, 2018
MD/MS/DM/MCH थीसिस के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करने हेतु विशेषज्ञ समूह की बैठक	8 मार्च, 2018
तंत्रिकाविज्ञान पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	8 मार्च, 2018
"हृद्वाहिकीय रोग" दिल्ली आपातकालीन जीवन हृद्याघात पहल : मिशन दिल्ली के लिए टास्क फोर्स की बैठक	9 मार्च, 2018
हर्बल हीलर्स के नवाचारी रवि की वैधता स्थापित करने हेतु टास्क फोर्स परियोजना की बैठक	9 मार्च, 2018
हीमोग्लोबिनोपैथी पर टास्क फोर्स परियोजना और विशेषज्ञ समूह की संयुक्त बैठक	13 मार्च, 2018
एंटीमाइक्रोबियल प्रतिरोध पर FAO द्वारा अनुमोदित आई सी एम आर–आई सी ए आर परियोजना की बैठक	15 मार्च, 2018
प्रजनन जैविकी, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य प्रभाग की विशेषज्ञ–सह–परियोजना पुनरीक्षण समूह की बैठक	15 मार्च, 2018
स्टेम सेल अनुसंधान और चिकित्सा हेतु राष्ट्रीय शीर्ष समिति (NAC-SCRT) की 19वीं बैठक	16 मार्च, 2018
प्री–इक्लैम्पसिया पर उन्नत अनुसंधान केन्द्र पर विशेषज्ञ समिति की बैठक	18 मार्च, 2018
आई सी एम आर के संस्थानों/केन्द्रों पर वैज्ञानिक उपकरणों के क्रय हेतु आई सी एम आर तकनीकी समिति की बैठक	19 मार्च, 2018
प्रमाण आधारित शिशु स्वास्थ्य के अंतर्गत पूर्वोत्तर में क्षमता निर्माण हेतु आई सी एम आर केन्द्र पर वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक	19 मार्च, 2018
पोस्ट डॉक्टरल फेलोशिप (PDF) के लिए मानव संसाधन विकास प्रभाग की चयन समिति की बैठक	20 मार्च, 2018
NFHS.4 के अंतर्गत में ड्राइड ब्लड स्पॉट (DBS) नमूनों के संबंध में बैठक	20 मार्च, 2018
मृत्यु के कारण के मेडिकल प्रमाणन को बेहतर बनाने के संबंध में आई सी एम आर– डब्ल्यू एच ओ की बैठक	20 मार्च, 2018
पोस्ट डॉक्टरल फेलोशिप के लिए चयन समीक्षा समिति की बैठक	21 मार्च, 2018
नवजात पर उन्नत अनुसंधान हेतु विशेषज्ञ समूह की बैठक	21 मार्च, 2018
विभिन्न लॉजिस्टिक संबद्ध समस्याओं पर फर्म के साथ चर्चा करने हेतु आई सी एम आर विशेषज्ञ समिति की बैठक	21 मार्च, 2018

प्रजनन जैविकी, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य प्रभाग की परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	22 मार्च, 2018
एंटीमाइक्रोबियल प्रतिरोध की ई क्यू ए एस प्रणाली की प्रगति की समीक्षा हेतु बैठक	23 मार्च, 2018
बालकालीन न्युमोनिया पर टास्क फोर्स अध्ययन के लिए मामले प्राप्त करने में बाधाओं पर चर्चा करने हेतु बैठक	23 मार्च, 2018
बालकालीन चोटों पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	23 मार्च, 2018
''भारतीय बालकालीन सहयोगी ल्युकीमिया समूह – तीव्र लिम्फोब्लास्टिक ल्युकीमिया के नवीन पहचान में आए रोगियों हेतु एक सहयोगी बहुकेन्द्रीय राष्ट्रीय अध्ययन'' पर टास्क फोर्स परियोजना पर विशेषज्ञ समूह की बैठक	26 मार्च, 2018
छत्तीसगढ़ राज्य के सुपेबेडा जिले में चिरकारी वृक्क रोग की समस्या पर चर्चा हेतु बैठक	26 मार्च, 2018
भारतीय आबादी में स्तन कैंसर के आनुवंशिक, चिकित्सीय, और जानपदिक रोगविज्ञानी कारकों के तुलनात्मक विश्लेषण पर टास्क फोर्स परियोजना पर विशेषज्ञ समूह की बैठक	26 मार्च, 2018
चिकित्सीय परीक्षणों हेतु बेडाक्विलीन और ड्रीमलैण्ड की क्रय संबंधी समस्याओं पर चर्चा करने हेतु बैठक	27 मार्च, 2018
''जैवआयुर्विज्ञानी संचार और प्रीडेटरी जर्नल्स का खतरा वैज्ञानिकों के लिए पाठ'' विषय पर कार्यशाला	27 मार्च, 2018
कैंसर निवारण पर विशेषज्ञ समूह की बैठक	27 मार्च, 2018

राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक गतिविधियों में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के वैज्ञानिकों की भागीदारी

चेन्नई स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय जानपदिक रोगविज्ञान संस्थान की वैज्ञानिक 'डी' प्रभदीप कौर ने न्यू यॉर्क, सं. रा. अ. में हृद्वाहिकीय स्वास्थ्य'' पर सम्पन्न बैठक में भाग लिया (25 फरवरी, से 2 मार्च, 2018)।

पुणे स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान के निदेशक डॉ डी. टी. मौर्य ने लन्दन, यू के में सम्पन्न ''प्राथमिकता वाले रोगों के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन के R&D रोडमैप्स प्रक्रिया के अन्तर्गत निपाह वाइरस के लिए परामर्श'' बैठक में भाग लिया (1–2 मार्च, 2018)।

नोएडा स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय कैंसर निवारण एवं अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ रवि मेहरोत्रा ने केप टाउन, दक्षिण अफ्रीका में (1) तम्बाकू प्रयोग को कम करने हेतु ब्लूमबर्ग पहल की बैठक (5–6 मार्च, 2018), (2) तम्बाकू अथवा स्वास्थ्य पर 17वें विश्व सम्मेलन (7–9 मार्च, 2018) तथा (3) नॉलेज हब्स की बैठक (10 मार्च, 2018) में भाग लिया (5–10 मार्च, 2018)।

मुम्बई स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय प्रतिरक्षारुधिरविज्ञान संस्थान के वैज्ञानिक 'जी' डॉ प्रभाकर एस. केदार ने तोहोकू विश्वविद्यालय, सेण्डाई, जापान में सम्पन्न ''भारत में जन्मजात अल्परक्तता के पैथोफिजियोलॉजी और आण्विक लक्षणवर्णन के अध्ययन हेतु सहयोगी प्रयास'' नामक डी एस टी–इण्डो जापान परियोजना की बैठक में भाग लिया (5–11 मार्च, 2018)।

पुणे स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान की वैज्ञानिक 'सी' डॉ वर्षा ए. पोतदार ने सिंगापुर में सम्पन्न भवसनी रोगजनों पर द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय बैठक में भाग लिया (7–9 मार्च, 2018)।

नई दिल्ली स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक 'जी' डॉ एस. के. घोश ने बैंकॉक, थाइलैण्ड में सम्पन्न ''मलेरिया लीवर स्टेज कंशोर्शियम बैठक एवं स्पोरोज़ोइट क्रायोप्रिज़र्वेशन कार्यशाला'' में भाग लिया (8–16 मार्च, 2016)।

पुणे स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान के वैज्ञानिक 'डी' डॉ भौलेश डी. पवार ने जेनेवा, स्विट्ज़रलैण्ड में (1) पोलियो प्रयोगशाला नैदानिकी को बेहतर बनाने पर एड हॉक स्माल वर्किंग ग्रुप की बैठक (12–13 मार्च, 2018), और (2) ग्लोबल पोलियो लेबोरेटरी नेटवर्क (PLN) के 24वें अनौपचारिक परामर्श बैठक (14–15 मार्च, 2018) में भाग लिया (12–15 मार्च, 2018)।

चेन्नई स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय यक्ष्मा अनुसंधान संस्थान की वैज्ञानिक 'ई' डॉ सी. पदमाप्रियदर्शिनी ने सिंगापुर में सम्पन्न ''एशियन क्षयरोग अनुसंधान एवं चिकित्सीय परीक्षण एकीकृत संगठन नेटवर्क (ए–ट्रैक्शन)'' की बैठक में भाग लिया (19–20 मार्च, 2018)।

नई दिल्ली स्थित भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद मुख्यालय की वैज्ञानिक 'ई' डॉ कामिनी वालिया ने पेरिस, फ्रांस में सम्पन्न ''एंटीबायोटिक्स शोध में चुनौतियां और नवीन धारणाएं'' विषय पर संपन्न संगोष्ठी में भाग लिया (19–21 मार्च, 2018)।

नई दिल्ली स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ अनुपकुमार अन्विकर ने गुआंगज़ोड, चीन में सम्पन्न RDT के प्री–क्वालीफिकेशन के लिए जांच दल के एक सदस्य के रूप में भाग लिया (19–21 मार्च, 2018)।

बेंगलुरु स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय रोग सूचनाविज्ञान एवं अनुसंधान केन्द्र की वैज्ञानिक 'ई' डॉ रोली माथुर ने डकर, सेनेगल में सम्पन्न (1) एथिक्स प्रीपेयर्डनेस : प्रकोपों के दौरान एथिक्स समीक्षा को सुगम बनाना (20–21 मार्च, 2018), और (2) राष्ट्रीय एथिक्स और बायोएथिक्स समितियों के विश्व सम्मेलन (22–24 मार्च, 2018) में भाग लिया (20–24 मार्च, 2018)।

नई दिल्ली स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ अनुपकुमार अन्विकर ने सिएटल, W I, सं. रा. अ. में सम्पन्न ''मलेरिया अनुसंधान वैज्ञानिक समूह के लिए दक्षिण एशिया अंतर्राष्ट्रीय उत्कृष्ट केन्द्र 2018'' की बैठक में भाग लिया (26–27 मार्च, 2018)।

जबलपुर स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय जनजाति स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ अपरुप दास ने वाशिंगटन/न्यू यॉर्क, सं. रा. अ. में सम्पन्न (1) एच एम एस सी अनुमोदित सहयोगी परियोजना ''भारत में जटिल मलेरिया के अध्ययन के लिए केन्द्र (26–27 मार्च, 2018), और (2) मध्य प्रदेश, भारत में आण्विक जैविकी, जीनोमिक्स, प्रतिरक्षाविज्ञान और अन्य शोध साधनों को लागू करने पर चर्चा करने (28–29 मार्च, 2018) हेतु बैठकों में भाग लिया (26–29 मार्च, 2018)।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वित्तीय सहायता में सम्पन्न संगोष्ठियां/ सेमिनार/कार्यशालाएं/पाठ्यक्रम/सम्मेलन

सोसाइटी ऑफ फ्री रैडिकल रिसर्च इन इंडिया की 16वीं वार्षिक बैठक – 2018 तथा मुक्त मूलकों, सूक्ष्मपोषक तत्व, एंटीऑक्सीडैंट्स और फंक्शनल फूड में ट्रांसलेशनल रिसर्च पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	18–20 फरवरी, 2018 नई दिल्ली	डॉ श्याम प्रकाश अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान नई दिल्ली
एंथ्रोपोलॉजी, स्वास्थ्य और विकास : झुकाव और भावी सापेक्ष महत्व पर सेमिनार	20–21 फरवरी, 2018 दिल्ली	डॉ गौतम के. क्षत्रिय दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली
शोध क्षमता निर्माण पर इण्डो – यू एस कार्यशाला	1–16 मार्च, 2018 चेन्नई	प्रो. एस. पी. त्यागराजन श्री रामचन्द्र मेडिकल कॉलेज एवं शोध संस्थान चेन्नई
कुपोषण का सामना करने हेतु राष्ट्रीय कार्यक्रम को सुदृढ़ बनाने के लिए पोषण पर चतुर्थ जन स्वास्थ्य संगोष्ठी	9 मार्च, 2018 चण्डीगढ़	डॉ पूनम खन्ना स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान चण्डीगढ़
रोगी सुरक्षा हेतु एक प्राइमर पर सेमिनार	15–16 मार्च, 2018 शिलांग	ले. क (डॉ) प्रबीन मेघा सेना अस्पताल शिलांग (मेघालय)
पीडियाड्रिक इमरजेंसी सम्मेलन – 2018 (PEMCON)	17–18 मार्च, 2018 रायपुर	डॉ अनिल कुमार गोयल आखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान रायपुर (छत्तीसगढ़)

बायोमेडिकल कचरा निपटान, समस्याओं चुनौतियों, जागरूकता एवं अवसरों पर सम्मेलन	22 मार्च, 2018 नई दिल्ली	श्री अनुज माथुर ASSOCHAM नई दिल्ली
तनाव प्रबंधन में योग की भूमिका पर राष्ट्रीय सम्मेलन (ROYISM-2018)	22–23 मार्च, 2018 कोल्हापुर	डॉ श्रीमती एस. एम. तिवाले डी. वाई. पाटिल मेडिकल कॉलेज कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
राष्ट्रीय सम्मेलन–SURGIPATH 2018	23–24 मार्च, 2018 नवी मुम्बई	डॉ उज्वला मटेश्वरी MGM मेडिकल कॉलेज नवी मुम्बई
मेडिकल युक्तियों और *इन वीट्रो* निदान हेतु वर्तमान नियमों पर राष्ट्रीय सेमिनार	23–24 मार्च, 2018 ऊटी	डॉ जी एन के गणेश जे. एस. एस. फार्मेसी कॉलेज ऊटी (तमिल नाडु)
मेडिकल युक्तियों में IOT की नवीन प्रवृत्तियों पर कार्यशाला	24 मार्च, 2018 कोइम्बटूर	डॉ के. जी. पार्थीबन दानिश अहमद इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी कोइम्बटूर
क्षयरोग के आण्विक निदान – एम डी आर टी बी जीन पहचान पर कार्यशाला	24–26 मार्च, 2018 कट्टनकुलातुर	डॉ मंगयरकरासी SRM मेडिकल कॉलेज अस्पताल एवं शोध केन्द्र कट्टनकुलातुर (कांचीपुरम) तमिल नाडु
अनुसंधान में बायोएथिक्स पर सम्मेलन	25 मार्च, 2018 चेन्नई	डॉ लता वेंकटेशन अपोलो नर्सिंग कॉलेज चेन्नई
क्रिस्टैलोग्राफी एवं एडवांस्ड मैटीरियल्स पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी (ISCAM-2018)	26–27 मार्च, 2018 चेन्नई	डॉ के. गुणासेकरन क्रिस्टैलोग्राफी एवं बायोफिजिक्स सेंटर मद्रास विश्वविद्यालय चेन्नई

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के कुछ प्रकाशन

1.	**इंडियन फूड कम्पोज़ीशन टेबल्स (2017)** लेखकः टी. लोंग्वाह, आर. अनन्तन, के. भास्करचारी एवं के. वेंकैया	350.00
2.	**लो कॉस्ट न्युट्रीशियस सप्लीमेंट्स** लेखक : सी. गोपालन, बी.वी.रामशास्त्री, एस.सी.बालसुब्रमणियन, एम.सी.स्वामीनाथन (द्वितीय संस्करण 1975, पुनर्मुद्रण - 2005-2011)	15.00

3.	**मेन्यूस फॉर लो कॉस्ट बैलेन्स्ड डाइट्स ऐण्ड स्कूल लंच प्रोग्रेम्स** (सुटेबल फॉर नार्थ इंडिया) लेखक : एस.जी.श्रीकंटिया, सी.जी.पंडित (द्वितीय संस्करण 1977, पुनर्मुद्रण 2004)	10.00
4.	**मेन्यूस फॉर लो कॉस्ट बैलेन्स्ड डाइट्स ऐण्ड स्कूल लंच प्रोग्रेम्स** (सुटेबल फॉर साउथ इंडिया) लेखक : एम.मोहन राम, सी. गोपालन (चतुर्थ संस्करण 1996, पुनर्मुद्रण 2002)	8.00
5.	**सम कॉमन इंडियन रेसिपीज़ ऐण्ड देयर न्युट्रीटिव वैल्यू** लेखक : स्वर्ण पसरीचा एवं एल.एम.रिबेलो (चतुर्थ संस्करण 1977, पुनर्मुद्रण 2006, 2011)	50.00
6.	**न्युट्रीशन फॉर मदर ऐण्ड चाइल्ड** लेखक : पी.एस. वेंकटाचलम् तथा एल.एम.रिबेलो (पंचम संस्करण 2002, पुनर्मुद्रण 2004, 2011)	35.00
7.	**सम थिरैप्यूटिक डाइट्स** लेखक : स्वर्ण पसरीचा (पंचम संस्करण 1996,पुनर्मुद्रण 2004, 2011)	15.00

'इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च' भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वेबसाइट www.icmr.nic.in, और www.ijmr.org.in पर उपलब्ध है

आई सी एम आर के प्रकाशनों की सूची इसकी वेवसाइट www.icmr.nic.in पर उपलब्ध है। आई सी एम आर के प्रकाशन प्राप्त करने के लिए महानिदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के नाम से बैंक ड्राफ्ट अथवा पोस्टल ऑर्डर भेजें। डाक व्यय अलग होगा। चेक अथवा मनीऑर्डर स्वीकार नहीं किए जाएंगे। इस संबंध में और अधिक जानकारी के लिए प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, पोस्ट बॉक्स 4911, अंसारी नगर, नई दिल्ली - 110029 से सम्पर्क करें।
दूरभाष : 91-11-26588895, 91-11-26588980, 91-11-26589794, 91-11-26589336, 91-11-26588707, (एक्स्टेंशन-228),
फैक्स -91-11-26588662 ई मेल : headquarters@icmr.org.in, icmrhqds@sansad.nic.in
सम्पर्क व्यक्ति : डॉ नीरज टण्डन, वैज्ञानिक 'जी' एवं
प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना

'आई सी एम आर पत्रिका' भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वेबसाइट www.icmr.nic.in पर भी उपलब्ध है

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद्

सेमिनार/संगोष्ठियां/कार्यशालाएं आयोजित करने के लिए परिषद द्वारा आंशिक वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है, वित्तीय सहायता के लिए निर्धारित प्रपत्र पर पूर्णतया भरे हुए केवल उन्हीं आवेदन पत्रों पर विचार किया जाएगा जो सेमिनार/संगोष्ठी/कार्यशाला आदि के आरम्भ होने की तारीख से कम से कम चार महीने पूर्व भेजे जाएंगे।

सहयोग : श्रीमती वीना जुनेजा, श्रीमती सरिता नेगी

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के लिए मैसर्स रॉयल ऑफसेट प्रिन्टर्स,
ए–89/1, नारायणा औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110 028 से मुद्रित। पं. सं. 47196/87